WIT AND HUMOUR, POETRY AND COUPLET HAPPENED IN THIRTEENTH SESSION OF SIXTEENTH LOK SABHA (15.12.2017-05.01.2018)

Sr. No.	Date	Subject	Name of Member/Minister	Poetry/ Humour/ Couplet/ Repartee
1.	21.12. 2017	Discussion on the Demands for Supplementary Grants recited the following Couplet of Mirza Ghalib	Dr. Ramesh Pokhriyal 'Nishank'	Couplet
2.	27.12.2017	'Zero Hour'	Shri Arvind Sawant	Quotation
3.	28.12.2017	Discussion on The Muslim Women (Protection of Rights on Marriage) Bill, 2017	Shrimati Meenakshi Lekhi	Poem
4.	03.01.2018	'Zero Hour'	Shri Mallikarjun Kharge and Hon. Speaker	Humour

A COUPLET

While participating in the Discussion on the Demands for Supplementary Grants on 21.12.2017, Dr. Ramesh Pokhriyal ‘Nishank' recited the following Couplet of Mirza Ghalib:-

“ उम्र भर इस भूल में जीते रहे गालिब,

कि धूल चेहरे पर थी और हम आइना पोछते रहे।”

On hearing this, there were thumping of desks from all sides of the House.

चार मरे तो क्या हुआ,
जीवित रहे हजार।

While participating during ‘Zero Hour’ on 27.12.2017 Shri Arvind Sawant, while paying tributes to Guru Gobind Singh, quoted the following lines of Guru Gobind Singh:-

‘ इन सिक्खन के लिए वार दिए सुत चार, चार मरे तो क्या हुआ, जीवित रहे हजार।’

On hearing this, there were thumping of desks from all sides of the House.

A POEM

While participating in the Discussion on The Muslim Women (Protection of Rights on Marriage) Bill, 2017 on 28.12.2017, Shrimati Meenakshi Lekhi recited the following Poem:-

" क्यों बनाते हैं हम ऐसे रिश्ते।
जो पल दो पल में टूट जाते हैं।
क्यों हम बनाते हैं हम ऐसे रिश्ते।
जो पल दो पल में टूट जाते हैं।
वादा तो करते हैं ताउम्र साथ निभाने का।
लेकिन हल्की सी आंधी में बिखर जाते हैं।"

On hearing this, there were thumping of desks from the Treasury Benches.

आपको मुझसे अच्छी हिन्दी आती है ।

While making submission during 'Zero Hour' on 03.01.2018, this is what transpired on the floor of the House between Shri Mallikarjun Kharge and Hon. Speaker:-

"**श्री मल्लिकार्जुन खड़गे (गुलबर्गा) :** महोदया, नियम 56 के तहत हमने स्थगन प्रस्ताव का नोटिस दिया था। लेकिन वह स्थगन प्रस्ताव अस्वीकार हो गया।

माननीय अध्यक्ष : एडजर्नमेंट मोशन स्वीकार नहीं हुआ है। मैंने शून्यकाल में यह बात कही है।

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे (गुलबर्गा) : महोदया, मैं 'अस्वीकार' कह रहा हूं। मुझे भी थोड़ी-थोड़ी हिन्दी आती है।

माननीय अध्यक्ष : आपको मुझ से अच्छी हिन्दी आती है। शायद मेरे सुनने में तकलीफ होने लगी है और यह आप ही के कारण हो रहा है।

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे (गुलबर्गा) : मैं अच्छे डॉक्टर के बारे में आपको बताऊंगा।"

On hearing this, there was laughter from all sides of the House.